S	M	T	W	T	F	S
31					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

उदारवाद, समाजवाद एवं कल्याणकारी राज्य

राज्य के कार्य → Functions of the State :→

राज्य के कार्य-क्षेत्र सिद्धांत का अर्थ :→ सभी विचारकों ने अपने देश-काल, राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक वातावरण को अपेक्षित रखते हुए अपने विचार व्यक्त किए हैं तथा राज्य और व्यक्ति के संबंधों का निरूपण करते हुए राज्य के कार्य-क्षेत्र का निर्धारण किया है। उनके विचार और कार्य-क्षेत्र विषयक सिद्धांतों में पर्याप्त अंतर होने के बाद भी यह देखने को मिलता है कि सभी राजनीतिक विचारकों एवं दार्शनिकों ने यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि राज्य का आधार क्या है? व्यक्ति का राज्य में क्या स्थान है और राज्य से उसका क्या संबंध होना चाहिए। राज्य के कार्य क्षेत्र और व्यक्ति से उसके सम्बन्धों के विषय में जो विचार प्रकट किए गए हैं, उन्हीं राजनीतिक विचारों को राज्य के कार्य-क्षेत्र सम्बन्धी सिद्धांतों की संज्ञा दी जाती है। ये सिद्धांत राजनीति की चिन्तन परम्परा में उदारवाद, उपयोगितावाद, आदर्शवाद, समाजवाद, साम्यवाद, गांधीवाद तथा लोक-कल्याणकारी राज्य की अवधारणा आदि नामों से जाने जाते हैं। इनमें से कुछ सिद्धांत व्यक्ति को साधन और राज्य को साध्य मानते हैं, जबकि कुछ इसके विपरीत व्यक्ति को साध्य और राज्य को साधन मानते हैं।

राज्य के कार्यक्षेत्र की समस्या
The Problem of State Activity

राज्य की आवश्यकता तथा उसके कार्य-क्षेत्र संबंधी समस्या के समाधान के लिए प्राचीन काल से आजतक राजनीति के चिन्तकों ने विभिन्न मतों का प्रतिपादन किया है। यद्यपि प्रारंभ से ही मुख्य प्रश्न यह रहा है कि बिना राज्य के मनुष्य का कार्य नहीं चल सकता? यद्यपि

राज्य की उपस्थिति आवश्यक है तो क्या मनुष्य की इच्छा श्रेष्ठ है? क्या राज्य मनुष्य के जीवन तथा उसकी सम्पत्ति का नियमन कर सकता है? राज्य अपने नियमों को मनवाने के लिए मनुष्य को कहाँ तक विवश कर सकता है? ये सभी प्रश्न वर्तमान के राजनीतिक चिन्तकों के सामने भी मुख्य प्रश्न हैं। कोकर ने ठीक ही कहा है कि "राज्य के कार्य-क्षेत्र को निश्चित करने की समस्या राजनीति सिद्धांत की सभी समस्याओं से सबसे अधिक जटिल है।"

राज्य के कार्य-क्षेत्र के संबंध में यूनानी दार्शनिकों - प्लेटो तथा उनके शिष्य अरस्तू - ने राज्य को सर्वोच्च संस्था माना है और व्यक्ति के विकास की सम्पूर्ण योजना राज्य पर केन्द्रित कर दी है। रूसो ने सामान्य इच्छा को सर्वोपरि बताकर राज्य को साध्य घोषित किया है। हीगल व बोसांके आदि आदर्शवादियों ने व्यक्ति को राज्य के सर्वथा अधीन कर दिया है। फासिस्टवादी व नाजीवादी दार्शनिकों ने भी राज्य को सर्वोपरि बनाकर व्यक्ति को राज्य के सर्वथा अधीन कर दिया है। दूसरा दृष्टिकोण अराजकतावादियों का है जो राज्य को एक अनावश्यक बुराई मानते हैं। वे राज्य के अस्तित्व को व्यर्थ मानते हैं।

तीसरा दृष्टिकोण व्यक्तिवादियों का है जिन्होंने व्यक्ति को साध्य माना है और राज्य को व्यक्ति के हितों की पूर्ति करने वाला साधन माना है। उग्र व्यक्तिवादियों ने राज्य को मनुष्य के लिए आवश्यक तो माना है किन्तु उन्होंने कहा है कि राज्य व्यक्ति का सदैव अहित करता है अतः उन्होंने राज्य के कार्य-क्षेत्र को अत्यंत सीमित करने का परामर्श दिया है। वर्तमान में लास्की व्यक्ति के विकास के लिए समाज व राज्य के स्वरूप में परिवर्तन को आवश्यक मानते हैं। उन्होंने स्वतंत्रता व समानता के लिए आवश्यक परिस्थितियों के निर्माण की आवश्यकता पर बल दिया है। उनका उद्देश्य जहाँ व्यक्ति के आर्थिक हितों के संरक्षण पर था किंतु इसके लिए उन्होंने पूँजीपति वर्ग के शोषण का विरोध किया था।